अष्टम-अध्याय

बच्चन के काल्य में सांस्कृति प्रतीक

(क) पौराणिक प्रतीक
(ख) प्राकृतिक प्रतीक
(ग) ऐतिहासिक प्रतीक
अध्याय-अष्टम

काव्य भाषा प्रायः प्रतीकात्मक होती है। ब्राह्मण का मत है कि कविता की भाषा पर विज्ञान के विपरीत प्रतीकात्मक की दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए, न कि ज्ञान-मीमांसा की दृष्टि से।”

बच्चन का काव्य प्रतीकों को दृष्टि से कौशलपूर्ण हैं। कवि द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों में कवि का दृष्टिकोण जीवन जगत तथा देशकाल की स्थितियाँ मुखित होती है। बच्चन ने प्रतीकों के द्वारा अभिव्यक्ति को सादरता प्रदान की है। प्रतीकों में कवि को सूक्ष्म और गहरी अनुभूति का प्रमाण भी मिलता है। उनके प्रतीक छायावादी काव्य परम्परा से भिन्न दिखाई पड़ते हैं। वैचे-वौचाए एवं रुढ़ तथा कृतिग्रंथ प्रतीकों की अपेक्षा बच्चन जी ने नई वैज्ञानिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक चेतना के अनुसूचित नए प्रतीकों के द्वारा नई अर्थवत्ता प्रदान की है।

पौराणिक प्रतीकः

बच्चन के काव्य में प्रसाद जी की भांति पौराणिक प्रतीकों का बाहुल्य नहीं है, किन्तु उनके काव्य में पौराणिक प्रसंगों से प्रतीकों की रचना की गयी है। बच्चन जी प्राचीन कवियों से भिन्न पौराणिक प्रतीकों की रचना की है। उनके काव्य में पौराणिक कथाओं एवं कल्पनाओं की अपेक्षा उनके प्रतीकात्मक अर्थों को ही प्रणालि किया गया है। पौराणिक कथाओं पात्रों एवं घटनाओं का कवि ने आधुनिकीकरण कर दिया है।

बच्चन जी ने पौराणिक प्रतीकों में सर्वाधिक प्रयोग “कल्पवृक्ष” का किया है। कल्प वृक्ष पौराणिक मान्यता के अनुसार स्वर्ग का एक अनुपम फल दातार वृक्ष है। कल्पवृक्ष नंदन कानन का श्रृंगार है। युद्धरियाँ उसके पीछे पराक्रम से अलंकरण करती हैं।

1. वि-न्यू ब्रिटिशम एफ्ड दि स्टाइल एफ्ड लैंबेज, ब्राह्मण ली, (रोजर काउलर सं60 एसेज ऑफ एफ्ड लैंबेज, पृष्ठ 60
बच्चन जी ने कल्प वृक्ष को प्रतीक के रूप में प्रहण किया है—

"चुम रहा था जो हदप में
एक तीखा शुल बनकर
विश्व के कर में पड़ा वह
कल्पतरु का फूल बनकर।"\(^1\)

बच्चन जी ने कल्पतरु पौराणिक प्रतीक को कविता के रूप में स्वीकार किया है। इस प्रकार पौराणिक प्रतीकों को नई अर्थविल्ला प्रदान की है।

कविता के लिए बच्चन जी ने एक अन्य पौराणिक प्रतीक सूत्रवाणी को बनाया है।

"भावना के पुष्प अपनी
सूत्र-वाणी में विरोध
धर विदे मैंने खुशी से
विश्व से विस्तीर्ण पथ पर।"\(^2\)

बच्चन जी ने 'अमृत मंदिर' पौराणिक रूपक का प्रयोग अपनी काव्य कृतियों में नए संदर्भ में प्रयुक्त करते हैं—

"अंत में जब
अमृत निकला
ज्योति फैली
तब आकेले
उसे पीने के लिए
षडयन्त्र जो तुमने रचा

1. मेरी श्रेष्ठ कविताएं कवि का गीत पृष्ठ 84
2. तद्परिवत्त पृष्ठ 85
सब पर बिदित है।
एक दानव ने उसे
दो बुंद चखने का
चुकाया मिल अपना शीश देकर।
औ अमृत पीकर
अमर जो तुम हुए को
बे-पिए क्या मर गए सब दैत्य-दानव?
आज भी वे जी रहे हैं
आज भी संतान उनकी
जी रही दूसरों नहाती
और पूछों और पोतों
फल रही है, बढ़ रही है।”

कवि बढ्यन “अमृत-मंधन” को सूचि के लिए जप्तरी मानते हैं। देव दानव युद्ध केवल
पौराणिक मान्यता ही नहीं है, वह तो प्रतिक बन चुका है, जो प्रकार की प्रकृतियों का संघर्ष
शाश्वत चेतना का अंग है-

“सूचि यदि चलती रही तो
अमृत-मंधन की जहरत
फिर पड़ेगी
और मंधन
वह अमृत के
जिस किसी भी रूप की खातिर

1. तदुपरिचित पुष्ठ 346
किया जाए-
बिना हो देव-दानव पश्च के
संभव न होगा
किन्तु अब से
मंडरायल भूल का
वह कठिन, ठोस, स्थूल, भारी
भाग देवों की
कमर पर
पीठ अंबों पर पड़ेगा
और दानव शिखर थामे
शोर भर करते रहेगे
अमृत जिंदाबाद, जिंदा-1
खास उनमें
अमृत पर व्याख्यान देगे-1
और मंधन काल में भी
देवतागण सर्प का मुख-भाग
पकड़ेगे,
फनों की चोट घुंटेगे,
मगर दल मानवों के
सर्प की वस दुम हिलाएगे
अमृत जब प्राप्त होगा
वे अकेले चाट जाएंगे।"¹

¹. तदुपरिवर्तु पृष्ठ 347
कवि ने अमृत मंधन के पौराणिक रुपक को लेकर युगीन संघर्ष, बीस-निपोर, काम
छिछोर दानवों द्वारा सिंधु के सब रत्न-धन को खुलकर भोगने का माध्यम बनाते हैं और
dेशकाल की पीड़ा को व्यक्त करते हैं-

"सुनो, हे देवताओं
दानवों का शाम
आगे आज उत्तरा
यह विगत संघर्ष भी तो
सिंधु-मंधन की तरह था।" ¹

कवि बचन के अनुसार देवता जो अमृत पिलाना चाहते थे, उनका बलिदान हुआ,
आपदाएं सही किन्तु शीर धान्याने बाले, काम कछोर लोग दानवों को भूति सब सुख लूटते रहे-

"जानता मैं हूँ कि तुमने भार ढोया
कड़ ढूँढ़ा
आपदाएं सही
कितना जहर घुटा
पर तुम्हारा बाह्य गूंघ।
देवता जो एक
दो बुद्धे अमृत की
पान करने को, पिलाने को चला था।
बलि हुआ।
लेकिन जिन्होंने
शीर आगे से माराया,
पूँछ पीछे से हिलाई, ¹
वही खीस-निपोर
काम छिछोर दानव
सिंधु के सब रत्न-दन के
आज खुलकर भोगते हैं।
बात है यह और
उनके कठ में जा
अमृत भद में बदलता है
और वे पागल नशे में
हद, हया, मरजाद
मदों में मिलकर
nाच नंगा नाचते हैं।
और हम-तुम
gुस पुरा अभिशाप से
sंतुप्त-विपजहि
यह तमाशा देखते हैं।’’

गुड़ भगवान विष्णु का पौराणिक मान्यता के अनुसार भावन माना जाता है। ‘गुड़’
के इस पौराणिक प्रतीक का प्रयोग कवि ने “सुत की माला कविता में गांधी के संदर्भ किया है–

“नत्यु खैरे ने गांधी का कर अन्त दिया
 कव्य कहा, सिंह की शिशु मेंढक ने लील लिया
धिकार काल, भगवान विष्णु के वाहन को
सहसा लपेटने में समर्थ हो गया कव्या।”

1. तदुपरिवर्त, पृष्ठ 347-48
2. तदुपरिवर्त सुत की माला पृष्ठ 168
पौराणिक, प्रतीकों में महाभारत को नागिन के रूप में चित्रित किया है। महाभारत के लिए
"रंभा" उर्वशी, इंद्राणी जैसे पौराणिक चरित्रों के माध्यम से व्यक्त किया है--

"तू नमोमोहिनी रंभा सी
तू रुपबती रति रानी सी
तू मोहम्मदी उर्वशी सदृश
tू मानमयी इन्द्राणी-सी।" ¹

पौराणिक शक्ताभार को संकटों के रूपक के रूप में कवि ने चित्रित किया है। तथा महाभारत के प्रसंगों को रूपकों के माध्यम से युगानुरूप संदर्भ प्रदान किये हैं--

"आज भी उनके
पराक्रम पूर्ण कथों का
महाभारत
लिखा युग के मुए पर
आज भी वे असंतोषः
भावा नहीं है,
बोलती है
जो संकट हम
घाटियों से
ठेलकर लाये यहां तक
अब हमारे वंशजों की
आन, उनकी सीधी ऊपर को चढ़ख़े
घोटियों तक।" ²

1. ततुपरिवर्त्त पृष्ठ 133
2. ततुपरिवर्त्त पृष्ठ 295
“अंगद” का पौराणिक रूपक कवि बच्चन ने लिया है—

“अंगदी विश्वास बाले
जो कि नीचे को बढ़े तो
भूमि कांपे
और ऊपर को उठे तो
देखते ही देखते
शैलोक्य नापे।”

वस्तुतः बच्चन आधुनिक चेतना के कवि हैं, वे पुराणों के प्रतीकों का प्रयोग नवीन जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना के लिए करते हैं और इस प्रकार पौराणिक प्रतीकों को आधुनिक हिन्दी कविता में पुनर्नवीन प्रदान करते हैं।

प्राकृतिक प्रतीक :-

बच्चन जी का काव्य प्राकृतिक प्रतीकों से युक्त है। कवि ने प्रकृति के प्रतीकों से काष्ठि, जीवन, उल्लास, प्रभ आदि भावों की व्यक्ता की है। प्रकृति के जीवन का वैविध्य है।

“कहीं दुर्जय देवों का कोप
कहीं तूफान, कहीं भूघाल
कहीं पर प्रलयकारिणी बाढ़
कहीं पर सर्वभक्षिणी ज्वाल।”

प्रकृति के क्षेत्र में एक बंजारे के प्रतीक से कवि मरुथालों के दौरों को पार कर कुंज जीवित में बैठने के लिए नहीं, चलने का आवाहन करता है—

1. तदुपरिवर्त शब्दशार पृष्ठ 399
2. तदुपरिवर्त बुलबुल पृष्ठ 58
“पार हुए मछलियाँ के दीले
सारे अंजर-पंजर ढेर
बैठ न थककर कुंज-करीले
घूल-घुंआ रे। चल बजारे।”

बच्चन जी ने प्राकृति वन्यजीवों के प्रतीकों को भी अंगीकार करते हैं। बृह भगवान अमीरों के झांगलूं की शोभा बढ़ाते हैं। प्राकृतिक चित्र रईसों के मकान में टींगे जाते हैं। शेर की खाल और हिरन की सींग सौदर्य प्रियता का साधन बनते हैं। कठणा के स्थान पर हिंसा को बढ़ावा देना है। इस प्रकार के प्राकृतिक सौदर्य उपादनों को प्रयोग और विलास प्रिय वस्तुओं का प्रदर्शन—

“बृह भगवान
अमीरों के झांग रुम,
रईसों के मकान
तुम्हारे चित्र, तुम्हारी मूर्ति से शोभायमान।
पर वे हैं तुम्हारे दर्शन से अनभिज्ञ
तुम्हारे विचारों से अनजान
सपने में भी उनके इसका नहीं आता ध्यान।
शेर की खाल, हिरन की सींग
कला-कारीगरी के नमूनों के साथ
तुम भी हो आतीन
लोगों की सौदर्य-प्रियता को
देते हुए तसकीन

1. तदपरिवत महर खेमे थौसठ बांटू पृष्ठ 350
इसीलिए तुम्हें एक की थी
आसमान-जमीन? \(^1\)

प्रकृति के परिवर्तनों, परमाणुओं के कस्पन नभ मंडल के हिलने आदि चित्रणों के माध्यम से सूचि के विनाश का संकेत किया है और महाप्रलय को विनाश का प्रतीक कहा है-

"परमाणु केंद्र जब करता है
हिल उठता नभ मंडल सारा
सब सुंदर नष्ट हो जायेगी
हो जायेगा जब मेरा क्षय." \(^2\)

मधु ऋतु जीवन उल्लास का प्रतीक है। कवि ने इस ऋतु को पाने के लिए ऋतु का उल्लास मनाने के लिए आनन्द, स्वच्छता और प्रथम गीतों की आवश्यक भूमि अपरिहार्य मानी है। कवि बच्चन के शब्दों में-

"माना, गाना गाने वाली चिड़ियां आई
सुन पड़ती कोकिल की बोली,
चली गई थी गर्म प्रदेशों से कुछ दिन को
जो, लौटी हसं की टोली
सजी-बजी बारात खड़ी है रंग-विरंगी
किन्तु न दूल्हे के सिर पर जब तक
मजरियों का मोर-मुकट कोई पहनाये
कैसे समझू मधु ऋतु आई." \(^3\)

---

1. तद्धरिक्रम, बुध और नवज्वर, 310
2. तद्धरिक्रम, हला, पृष्ठ 57
3. तद्धरिक्रम, आरती और अंगारे पृष्ठ 261
बच्चन जी ने सांस्कृतिक सम्पन्नता के लिए गंधर्वनाल का प्रतीक प्रहण किया है आज का वैदिक जीवन शुष्क राय है, प्रकृति से दूर मानव की सुख शान्ति खो रही है। ऐसी स्थिति में हर प्रेमी मन की कामना गंधर्व ताल में स्थान करने की है-

"जल नील-नवल
शीतल, निर्मल
जल-तल पर सोना-चिरैया रे
छितवन की,
छितवन की ओट तलैया रे
छितवन की।"\(^{1}\)

इस गंधर्वनाल में प्रेमी रसायण करना चाहता है। पोखर में कूदकर नहाने की कामना इस प्रकार से प्राकृतिक रूपकों से युक्त है-

"संग्रं, मुखको
भी जाने दे
पोखर में कूद
नहाने दे
लू तेरी सात बलैया रे
छितवन की।"\(^{2}\)

ऐतिहासिक प्रतीक :-

बच्चन जी के काव्य में ऐतिहासिक प्रतीक उपलब्ध होते हैं। रामायण एवं महाभारत के प्रसंगों चरित्रों को प्रतीकात्मक बनाकर बच्चन जी ने युगीन चेतना को आभियोजित दी है।

1. तदुपरिवृत्त गंधर्वनाल पृष्ठ 356
2. तदुपरिवृत्त पृष्ठ 357
“बंगाल का अकाल” ऐतिहासिक घटना है, कवि ने “बंगाल के अकाल” ऐतिहासिक प्रतीक के माध्यम से धरती के कंकाल और कंगाल की ओर संकेत किया है—

“पढ़ गया बंगाले में काल
भरी कंगालों से धरती
भरी कंकालों से धरती।”

बच्चन ने दुनिया के तानाशाहों का ऐतिहासिक नायकों की छूटता का संकेत करते हुए गांधी को फकीर कहकर आश्चर्य व्यक्त की है—

“दुनिया के तानाशाहों का सर्वोच्च शिखर
यह कैंक़ो, टोजो, मसोलिनी पर हर हिटलर
यह रूजवेल्ट, यह डुमन जिसकी चेस्टा पर
ही रोशीमा, नागासाकी पर बड़ा कहर
यह है चियांग, जापान गर्व को मर्जित कर
जो अरब चीन के साथ आज करता संगर
यह भीमकाय परिवर्तित है जिसको लगी फिकर
इंग्लिशतानी साम्राज्य रहा है बिगड़-बिखर
यह अफ्रीका का स्मरित खबर है जिसे नहीं,
क्या होता, गोररकाले चमड़े के अन्दर,
यह स्टलिनग्राह
का स्टलिन लौह का
ढोस बोरा।”

1. तदुपरिवर्तु बंगाल कानेलक पुस्तक 157
2. तदुपरिवर्तु खादी के पूरा पुस्तक 188
खजुराहे के पाण्य अमरकोला के ऐतिहासिक प्रतीक हैं। कवि के भीतर जीवन की उद्दाम लालसा है और विवधान से वर्धन मांगता है कि मुझे खजुराहे का पाण्य बना दें-

"मैं जीवित हूँ मेरे अंदर
जीवन की उद्दाम पिपासा
जड़ मुखों के हेतु नहीं है
मेरे मन में मोह जारा सा,
पर उस युग में होता जिसमें
ली तुमने छनी-टोकी तो
एक मांगता वर विचि से, कर दे मुझको
पाण्य तुम्हारा
खजुराहे के निर्दर कलाघर
अमर शिला में नाम तुम्हारा।"\(^1\)

"लाजमहल" ऐतिहासिक धरोहर जिसे कवि ने प्रेम के प्रतीकों के रूप में लिया है-

"यह ताज साह का प्रेम प्रतीक नहीं इतना
जितना मुमताजमहल के कोमल भावों का
जो खोकर शीतल तीकर बनता तापों पर
जो भरकर सुखकर मरहम बनता घावों का."\(^2\)

बच्चन के ऐतिहासिक प्रतीक प्रायः परम्परा से गुहित हैं, उनमें प्रेम और स्वच्छंद भावों
की ही व्यंजना प्रमुख है।

1. तदुपरिवर्त्त आरती और अंगारे पृष्ठ 250
2. तदुपरिवर्त्त पृष्ठ 253